विश्व हिन्दी दिवस

३० सितंबर २०२२
स्टॉकहोम

टिप्पणी
राजदूत श्री तन्मय लाल

नमस्कार
भारतीय राजदूतावास में इस भारत स्वीडन संबंध गॅलरी में आप सब का स्वागत है।

मैं विशेष रूप से प्रोफ़ेसर वैस्लर का आभारी हूँ , जिन्होनें हमारा निमंत्रण स्वीकार किया और उप्पसाला से आज यहाँ हमारे बीच उपस्थित हुए हैं। आपका विशेष स्वागत है। और साथ ही आपके छात्रों का जो समय निकाल कर आज यहाँ आए हैं।

आप सब जानते ही हैं कि इस वर्ष हम भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष मना रहे हैं। भारत के एक लंबे इतिहास में इन ७५ वर्षों का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

भारत एक प्राचीन और समृद्ध सभ्यता है। यह अनेक विविधताओं का देश है।
धर्म, भाषा, जातीय समूह, विचार, खान पान, वेश भूषा, नृत्य और संगीत आदि की यह विविधता शायद ही किसी अन्य देश में देखी जा सकती है।
यह विविधता हमारी संस्कृति को समृद्ध बनाती है। इस विविधता में एक एकता है।

भारत के हज़ारों वर्ष के इतिहास में विभिन्न क्षेत्रों में अनेक भाषाएं पनपी हैं।

कुछ महीने पहले हमने यहाँ राजदूतावास में एक कार्यक्रम आयोजित किया था जिसमें भारत के विभिन्न भाषा भाषियों ने अपनी अपनी भाषा में प्रस्तुतियाँ कीं।

आज हम यहाँ हिन्दी के विषय में चर्चा करने के लिए जुड़े हैं।

हिन्दी भारत की प्रमुख भाषाओं में एक है। भारत में यह एक संपर्क भाषा के रूप में भी उभरी है।

यदि हम भारत के बाहर हिन्दी का उपयोग और अध्ययन को देखें तो इस विषय में मैं दो बातें रखना चाहूँगा।

एक तो यह कि

भारत के बाहर बसे भारतीय मूल के लोग अपनी युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति और उनकी मातृभाषा के संपर्क में रखना चाहते हैं।

भारतीय मूल के ३० मिलियन यानि ३ करोड़ लोग आज भारत के बाहर पूरे विश्व में पिछले कई वर्षों या दशकों या सदियों से बसे हैं या काम करते हैं।

यहाँ स्वीडन में आज लगभग ६०,००० से अधिक भारतीय या भारतीय मूल के निवासी हैं। इसमें अधिकांश वे लोग हैं जो पिछले कुछ वर्षों में ही यहाँ आए हैं। ये सभी अपने बच्चों को भारतीय त्योहार, संस्कृति और भाषाएं सिखाने का प्रयास कर रहे हैं। या तो स्कूलों में या समुदाय के द्वारा।

मुझे बताया गया है कि स्वीडन में स्कूलों में हिन्दी सीखने की भी व्यवस्था है।

इसके अलावा घर पर यदि माँ बाप बच्चों से अपनी मातृभाषा में बात करते हैं तो बच्चे वह भाषा बोलचाल के लिए जल्दी सीख जाते हैं।

आज बॉलीवुड फ़िल्में और हिन्दी टीवी कार्यक्रम भी दुनिया भर में टीवी या सोशल मीडिया चैनलों पर आसानी से देखे जा सकते हैं।

इन सब से भारतीय मूल के लोग विदेशों में हिन्दी से संपर्क बनाए हुए हैं।

दूसरी बात यह है कि

वैश्वीकरण के इस दौर में यह भी आवश्यक है कि हम एक दूसरे के बारे में और अधिक जानें।
इससे साथ काम करना और आसान हो जाता है। और एक दूसरे के बारे में ग़लत stereotypes कम हो पाते हैं।

एक नई भाषा सीखने से हमारे worldview और outlook में अंतर आता है क्योंकि हर भाषा अपनी संस्कृति, इतिहास, विचारों से जुड़ी होती है।

भारत एक प्राचीन सभ्यता ही नहीं, अनेक धर्मों और दर्शनशास्त्रों का जन्मस्थल भी है।

साथ साथ आज भारत विश्व में पाँचवीं सबसे बड़ी इकॉनोमी है। पूरी दुनिया की आबादी का लगभग २०% भारत ही है।

किसी भी वैश्विक समस्या के समाधान के लिए भारत का एक महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। हिन्दी और भारतीय भाषाओं के अध्ययन से भारत को समझने में सहायता होती है।

इसी तरह अनेक मल्टीनैशनल कम्पनियाँ आज भारत के विशाल मार्केट में सफलता के लिए भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल करती हैं।

यूरोप में इंडोलोजी और संस्कृत अध्ययन की एक लंबी प्रथा रही है। यूरोप और अमेरिका में अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी, विश्व की एक प्रमुख भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।

आज विश्व में ७० से अधिक देशों में लगभग ३०० संस्थानों में हिन्दी पढ़ने पढ़ाने की व्यवस्था है। तो यह आशाजनक बात है।

यहाँ स्वीडन में उप्पसला विश्वविद्यालय में लगभग २०० साल पहले संस्कृत पढ़ाने का कार्यक्रम शुरू हुआ। जहाँ प्रोफ़ेसर वैस्लर आज हिन्दी के प्रोफ़ेसर हैं।

मॉरिशस में आज विश्व हिन्दी सचिवालय स्थित है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ६ भाषाओं के अतिरिक्त अब हिन्दी में भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कार्यरत है। इससे उसे एक विशाल जन समूह तक अपने कार्य को ले जाने में मदद मिल रही है।

विदेश में अनेक प्रमुख रेडियो जैसे BBC, VOA, DW, जापान, UAE आदि से हिन्दी में नियमित रेडियो प्रसारण हो रहे हैं। इनका मकसद अपनी बात हिन्दी भाषी लोगों तक पहुचाने का ही है।

अनेक हिन्दी पत्र पत्रिकाएं भी विदेशों से प्रकाशित हो रही है।

तो भारत के बाहर हिन्दी का अध्ययन कई कारणों से हो रहा है। यह और भी बढ़ेगा।

एक तरफ़ भारतीय मूल की युवा पीढ़ी के एक बड़े अंश के लिए अपनी संस्कृति और मातृभाषा से जुड़ने के लिए।
विदेशी स्कॉलर्स को भारत की एक प्रमुख भाषा जानने के लिए।
विदेशी मीडिया और संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे संगठनों को अपनी बात एक विशाल जन समूह तक पहुंचाने के लिए।
विदेशी मल्टीनैशनल कम्पनियों को भारतीय बाज़ार में सफलता के लिए। आदि।

हम धन्यवाद देना चाहेंगे प्रोफ़ेसर वेस्लर का, इस निबंध प्रतियोगिता के आयोजन में उनके मार्गदर्शन के लिए।

इस प्रतियोगिता में कई लोगों ने भाग लिया। हम उन सभी को उनके प्रयास और उत्साह के लिए धन्यवाद देते हैं। आशा करते हैं कि हिन्दी में आपकी रुचि बनी रहेगी। और इस संपर्क को हम और गहरा बनाने में कार्य करते रहेंगे।

अब हम उत्सुक हैं प्रोफ़ेसर वेस्लर से इस अवसर पर उनके विचार सुनने के लिए।